INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

Level – 2

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 4

सामाजिक अध्ययन – 1

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “**राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** ” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है । ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “**राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2 भर्ती परीक्षा** ” में पूर्ण संभव मदद करेंगें ।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं । अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं ।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/98bnwi

Online Order करें - https://shorturl.at/ixJQI

https://shorturl.at/belyI

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	सामाजिक अध्ययन भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं समाज	
1	सिन्धु घाटी सभ्यता	1
2	वैदिक काल	6
3.	जैन व बौद्ध धर्म	9
4	महाजनपद काल	12
5	मौर्य काल	13
6	गुप्त साम्राज्य एवं गुप्तोत्तर काल	16
7	भारत 600 -1000 ईस्वी. वृहत्तर भारत	20
8	राजनीतिक इतिहास	30
	मध्यकाल एवं आधुनिक काल	
1	भक्ती और सूफी आन्दोलन	34
2	मुगल प्रशासन	39
3	मुगल - राजपूत संबंध	49
4	भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति	52
5	1857 का विद्रोह	65
6	पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार	74
7	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन	86
	भारतीय संविधान एवं लोकतंत्र	
1	भारतीय संविधान का निर्माण	101
2	विशेषतायें	104
3	उद्देशिका (प्रस्तावना)	105

4	संघ एवं इसका राज्य क्षेत्र	108
5	मौलिक अधिकार	109
6	नीति निदेशक तत्त्व	114
7	मूल कर्त्तव्य	116
8	सामाजिक न्याय	117
9	बालकों से संबंधित अपराध एवं बाल संरक्षण	118
10	लोकतंत्र में निर्वाचन व मतदाता जागरूकता	121
11	भारतीय संसद	122
12	राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	129
13	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद	134
14	उच्चतम न्यायालय	135
15	राज्य सरकार (राज्यपाल , मुख्यमंत्री , महाधिवक्ता, विधानमंडल , उच्च न्यायालय इत्यादि)	137
16	पंचायती राज एवं नगरीय स्व-शासन (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)	146
17	जिला प्रशासन व न्याय व्यवस्था	151
18	अन्य महत्वपूर्ण तथ्य	154
	पृथ्वी एवं हमारा पर्यावरण	
1	अक्षांश, देशान्तर	162
2	पृथ्वी की गतियां	163
3	वायुदाब एवं पवनें	164
4	चक्रवात	166
5	सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण	167
6	पृथ्वी के मुख्य जलवायु कटिबन्ध	168

7	जैवमंडल, पर्यावरणीय समस्याएँ एवं समाधान	169
	<u>भारत का भूगोल</u>	
1	सामान्य परिचय	178
2	भू-आकृति प्रदेश	180
3	नदियाँ एवं झीलें	187
4	जलवायु	194
5	प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन	196
6	प्रमुख बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएं	198
7	मृदा	202
8	कृषि	204
9	उद्योग	209
10	प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	213
11	परिवहन तंत्र	217
12	भारत की जनगणना	223
13	विकास के आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रम	226
14	अन्य महत्वपूर्ण तथ्य	228

भारतीय सभ्यता,संस्कृति एवं समाज

अध्याय – 1

सिन्धु घाटी सभ्यता

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जातीहै।
- मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल -

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिस के लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ान हीं गया है इसलिए इसलिए सभ्यता को आद्यऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं। इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपिक हते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगाकी सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल- ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक का लजि समेंवेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
  - वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रान्ति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया

- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते है।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हडप्पा की खोज की।
- 1922 में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
- 20 सित० 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।
- **सिन्धु सभ्यता की प्रजातिया--**
  - प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
  - भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ो की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक
  - मंगोलियन - मोहनजोदडो से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की
  - अल्पाइन

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
व्हिलर - 2500-1700 ई.पू.
मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

मैके — मार्शल, नदी में बाढ़ के कारण, एस.आर.राव

व्हीलर — गार्डन चाइल्ड, बाहय आक्रमण, पिगट

आरेल स्टीन, ए.एन.घोष — जलवायु परिवर्तन

प्राकृतिक आपदा - केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार→

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हडप्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं।

मोहनजोदडो	**हडप्पा**
चन्हुदडों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा**- राखीगढी, सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक 86 बाडा, संघोल, टेर माजरा
- **रोपड़ (रूपनगर)** - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे

सभ्यता का उत्तरी स्थल

- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल, तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर

सभ्यता का पूर्वी स्थल

- माण्डी
- बड़गांव
- हलास
- सनौली

- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल, रोजदि रवी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलो मीटर

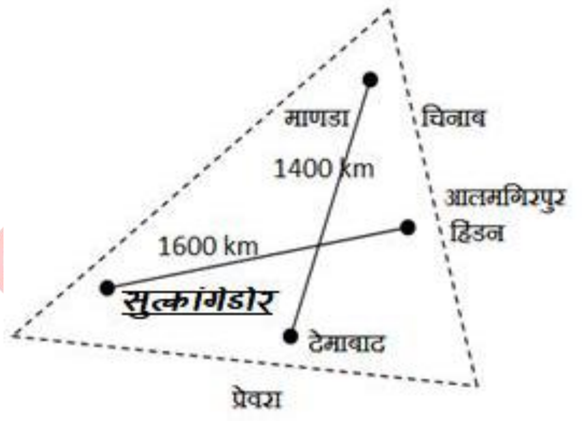

स्थल	**नदियों के नाम**	**उत्खन्न वर्ष**	**उत्खननकर्ता**	**वर्तमान स्थिति**
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ो	सिंधु	1922	राखालदास बनर्जी	सिंध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिंधु	1955	फजल अहमद	सिंध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंडन	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविंद्रनाथः विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविंद्रनाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ ज़िला (भारत)

इस सभ्यता की महत्वपूर्ण बातें - स्वतन्त्रता के बाद सर्वाधिक स्थल गुजरात में खोजे गये है।
अल्लाहदीनो एवं मोहनजोदडो से सोने की वस्तुएं भारी संख्या में मिली है।

- जुते हुए खेत के साक्ष्य कालीबंगा से
- चन्हुदडो लोथल एवं बगसरा से मनके बनाने की कार्यशाला मिली है।

- कालीबंगा तथा पिराक (बल्लूचिस्तान) से एकसाथ दो फसल उगाने के साक्ष्य प्राप्त हुए है।
- लोथल एवं कालीबंगा से युग्म शवाधान के साक्ष्य प्राप्त हुए
- लोथल कालीबंगा, संघोला, बणावली आमरी नगेश्वर, बगाड एवं राखीगढ़ी से यज्ञवेदी का साक्ष्य मिलता हैं ।
- कालीबंगा एवं वणावली की यज्ञवेदी सामुदायिक महत्त्व की थी।
- ऋग्वेद में हडप्पा सभ्यता को हरियूपिया कहा गया है।
- रहमानदेरी प्राचीनतम नगर है जहां ग्रिड सड़कों एवं निवासों की व्यवस्था हुई।
- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- ***सिन्धु सभ्यता के 7 नगर***
  - हडप्पा
  - बनावली
  - मोहनजोदड़ो
  - धौलावीरा
  - चन्हुदडो
  - लोथल
  - कालीबंगा

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- ***हडप्पा***
- रावी नदी के किनारे पर स्थित
- दयाराम साहनी ने खोजा ।
- खोज- वर्ष 1921 में
- उत्खनन-

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।
ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
iii. 1996 में मार्टिन व्हीलर द्वारा

- हडप्पा 5 किमी की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हडप्पा एवं मोहनजोदड़ा को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 km.
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहां के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हडप्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F हैं ।
- हडप्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया ।
- यहां से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया
- हडप्पा एवं मोहनजोदडो में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते है।

  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हडप्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीर निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्त्वपूर्ण है।

मोहनजोदड़ो

- सिन्धु नदी के तट पर मोहनजोदडो की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - **मार्शल**
  - **जे.एच. मैके**
  - **जे.एफ. डेल्स**
- हडप्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदडो देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदडो का नगर कच्ची ईटो के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदडो सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ो को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहा से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं।
- वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहां से मिली है।
- मोहनजोदडो की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहां से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहां से एक 20 खम्भों वाला सभा भवन मिला है।
- मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदडो से मिले हैं।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त हुआ हैं ।
- **मार्शल**- आश्चर्यजनक निर्माण

कालीबंगा

- खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में
- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में हैं ।
- **उत्खनन** - बी.बी लाल 1953 में
  बी. के. थापर
- ***कालीबंगा का अर्थ*** - काले रंग की चूड़ियाँ
- ***कालीबंगा*** - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी
- एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले ।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण
- सड़को को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त ।
- युग्म शवाधान का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहां से प्राप्त ।
- भूकम्प आने के प्राचीनतम प्रमाण

गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

नाटक	नाटककार	नाटक का विषय
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है।
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	दुष्यंत तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है।
देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शाकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसंतसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वेश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है।
स्वप्नवासवदत्तम	भास	इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।
प्रतिज्ञायौगंधरायणकम्	भास	महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है।
चारुदत्तम्	भास	इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है।

मातृगुप्त

इनके विषय में जानकारी कल्हण के राजतरंगिणी से मिलती है। संभवतः मातृगुप्त ने भरत के नाट्य-शास्त्र पर कोई टीका लिखी थी।

भर्तृभेण्ठ

'हस्तिपक' नाम से भी जाने वाले इस कवि ने 'हयग्रीववध' काव्य की रचना की।

विष्णु शर्मा

विष्णु शर्मा के द्वारा रचित काव्य 'पंचतंत्र' के विश्व की लगभग 50 भाषाओं में 250 भिन्न भिन्न संस्करण निकल चुके हैं। पंचतंत्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ 'बाइबिल' के बाद दूसरे स्थान पर की जाती है। 16वीं शती के अंत तक इस ग्रंथ का अनुवाद यूनान, लैटिन, स्पेनिश, जर्मन एवं अंग्रेज़ी भाषाओं में किया जा चुका था। पंचतत्र 5 भागों में बंटा है-

1. मित्रभेद,
2. मित्रलाभ.
3. सन्धि-विग्रह,
4. लब्ध-प्रणाश,
5. अपरीक्षाकारित्व।

गुप्तकाल के धार्मिक ग्रंथ

पुराण

पुराणों के वर्तमान रूप की रचना गुप्त काल में ही हुई, इनमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख मिलता है। पुराणों का अंतिम रूप से संकलन भी गुप्त काल में हुआ है। दो महान गाथा काव्य रामायण और महाभारत ईसा की चौथी सदी (गुप्तकाल) में पूरे हो चुके थे। अतः इनका संकलन गुप्त युग में ही हुआ। 'रामायण' में परिवार रूपी संस्था का आदर्श रूप वर्णित है। 'महाभारत' में दुष्ट शक्ति पर इष्ट शक्ति की विजय दिखाई गई है। 'भगवत्गीता' प्रतिफल की कामना के बिना कर्तव्य पालन के निर्देश देती है।

स्मृतियां

गुप्त काल में याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, एवं बृहस्पति की स्मृतियां लिखी गई। इनमें 'याज्ञवल्क्य स्मृति' सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इस स्मृति में आचार, व्यवहार, प्रायश्चित आदि का उल्लेख है। **हीनयान** (बौद्ध धर्म) शाखा के 'बुद्ध घोष' ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा, इनका प्रसिद्ध गंथ 'विसुद्दिमग्य' है। जैन दार्शनिक आचार्य 'सिद्धसेन' ने **न्याय दर्शन** पर 'न्यायवताम्' ग्रंथ लिखा है।

गुप्तकालीन तकनीक ग्रंथ

रचनाकार	रचना
चन्द्रगोमिन	चन्द्र व्याकरण
अमर सिंह	अमरकोष (संस्कृत का प्रमाणित कोष)
कामन्दक	नीतिसार (कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्रभावित)
वात्स्यायन	कामसूत्र

विज्ञान- गुप्त काल में खगोल शास्त्र, गणित तथा चिकित्सा शास्त्र का विकास भी अपने उत्कर्ष पर था।

वराहमिहिर

गुप्त काल के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री वराहमिहिर हैं। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ वृहत्ससंहिता तथा पञ्चसिद्धन्तिका हैं। वृहत्संहिता में नक्षत्र-विद्या, वनस्पतिशास्त्रम्, प्राकृतिक इतिहास, भौतिक भूगोल जैसे विषयों पर वर्णन है।

आर्यभट्ट

- 'आर्यभट्टीय' नामक ग्रंथ की रचना करने वाले आर्यभट्ट अपने समय के सबसे बड़े गणितज्ञ थे। इन्होंनें दशमलव प्रणाली का विकास किया। इनके प्रयासों के द्वारा ही खगोल विज्ञान को गणित से अलग किया जा सका। आर्यभट्ट ऐसे प्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक थे, जिन्होंने यह बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य के चक्कर लगाती है। इन्होनें सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण होने वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला। आर्यभट्ट ने सूर्य सिद्धान्त लिखा।
- आर्यभट्ट के सिद्धान्त पर भास्कर प्रथम ने टीका लिखी। भास्कर के तीन अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं- 'महाभास्कर्य', 'लघुभास्कर्य' एवं 'भाष्य'। ब्रह्मगुप्त ने 'ब्रह्म-सिद्धान्त' की रचना कर बताया कि 'प्रकृति के नियम के अनुसार समस्त वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती हैं, क्योंकि पृथ्वी अपने स्वभाव से ही सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है। यह न्यूटन के सिद्धान्त के पूर्व की गयी कल्पना है। आर्यभट्ट, वराहमिहिर एवं ब्रह्मगुप्त को संसार के सर्वप्रथम नक्षत्र-वैज्ञानिक और गणितज्ञ कहा गया है।

चिकित्सा ग्रंथ

- चिकित्सा के क्षेत्र में वाग्भट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टांग हृदय' की रचना की। आयुर्वेद के एक और ग्रंथ 'नवीनतकम्' की रचना भी गुप्त काल में हुई
- चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार का प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य एवं चिकित्सक 'धन्वंतरि' था।
- गुप्तकालीन चिकित्सकों को 'शल्य शास्त्र' के विषय में जानकारी थी।
- गुप्त काल में अणु सिद्धान्त का भी प्रतिपादन हुआ।

अध्याय – 7

भारत 600- 1000 ईस्वी. वृहत्तर भारत

कुषाण वंश

- मौर्योतरकालीन विदेशी आक्रमणकारियों में कुषाण वंश सबसे महत्वपूर्ण है । पह्लवो के बाद भारतीय क्षेत्र में कुषाण आये जिन्हें युची और तोखरी भी कहा जाता है । कुषाणों ने सर्व प्रथम बैक्ट्रिया और उत्तरी अफगानिस्तान पर अपना शासन स्थापित किया । तथा वहां से शक शासकों को भगा दिया अन्ततं : उन्होंने सिंधु घाटी निचले तथा गंगा के मैदान के अधिकाशं क्षेत्र पर अधिकार कर लिया ।
- कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस था । इसने तांम्बे का सिक्का चलाया था । सिक्कों के एक भाग पर यवन शासक हर्मियस का नाम उल्लेखित है तथा दूसरे भाग पर कुजुल का नाम खरोष्ठी लिपि में खुदा हुआ है। कुजुल कडफिसेज के बाद विम कडफिसेज शासक बना जिसने सर्वप्रथम सोने का सिक्का जारी किया । इसके अतिरिक्त कुषाणों ने प्राचीन भारत में नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाने के साथ ही उत्तरी पश्चिमी भारत में सर्वाधिक संख्या में तांम्बे के सिक्के भी जारी किये ।
- इसके सिक्कों पर शिव नंदी तथा त्रिशूल की आकृति एवं महेशवर की उपाधि उत्कीर्ण हैं। इसने अपना राज्य सिंधु नदी की पूर्व में फैलाया । एवं रोम के साथ इसके अच्छे व्यापारिक संबंध थे । विम कडफिसेज के बाद कनिष्क ने कुषाण साम्राज्य की सत्ता संभाली कनिष्क कुषाण वंश का महानतम शासक था । इसके कार्य काल का आरम्भ 78 ई. माना जाता है । क्योंकि इसी ने 78 ई. में शक संवत् आरंम्भ किया ।
- इसके साम्राज्य में अफगानिस्तान, सिंध बैक्ट्रिया तथा पर्थिया के क्षेत्र सम्मिलित थे । कनिष्क ने भारत में अपना साम्राज्य विस्तार मगध तक किया तथा यहीं से वह प्रसिद्ध विद्वान अश्वघोष को अपनी राजधानी पुरुषपुर ले गया । उसने कश्मीर को विजित कर वहां कनिष्कपुर नामक नगर बसाया । कनिष्क बौद्ध धर्म की महायान शाखा का संरक्षक था । इसके सिक्कों पर बुद्ध का अंकन हुआ है । उसने कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया। कनिष्क कला और संस्कृत साहित्य का संरक्षक था । कनिष्क की राज सभा में पार्श्व वसुमित्र और अश्वघोष जैसे बोद्ध दार्शनिक विधमान थे । नागार्जुन और चरक भी [चिकित्सा] कनिष्क के राजदरबार में थे ।
- कनिष्क के बाद कुषाण साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हुआ। उसका उत्तराधिकारी हुविष्क था । हुविष्क के पश्चात कनिष्क द्वितीय शासक बना जिसने सीजर की उपाधि ग्रहण की । कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था । जिसने अपना नाम भारतीय पर रख लिया । वासुदेव शैव

अध्याय – 3

मुगल - राजपूत संबंध

मुग़ल सम्राट और उनकी राजपूत नीति

बाबर

बाबर की राजपूतों के प्रति कोई सुनियोजित नीति नहीं थी। उसे मेवाड़ के राणा साँगा और चंदेरी के मेदिनी राय के खिलाफ लड़ना पड़ा क्योंकि भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना और सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था। दोनों अवसरों पर, उन्होंने अपनी सफलता के बाद जिहाद की घोषणा की और राजपूतों के सिर की मीनारों को उठाया। लेकिन उन्होंने एक राजपूत राजकुमारी के साथ हुमायूँ से शादी की और राजपूतों को सेना में नियुक्त किया। इस प्रकार उन्होंने न तो राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की और न ही उन्हें अपना स्थायी दुश्मन माना।

हुमायूँ

हुमायूँ ने राजपूतों के बारे में अपने पिता की नीति को जारी रखा। हालाँकि, उसने मेवाड़ के राजपूतों से दोस्ती करने का एक अच्छा अवसर खो दिया। उन्होंने मेवाड़ को गुजरात के बहादुर शाह के खिलाफ भी मदद नहीं की, जब मेवाड़ की रानी कर्मावती ने उनकी बहन बनने की पेशकश की थी । वह शेरशाह के खिलाफ मारवाड़ के मालदेव का समर्थन पाने में भी असफल रहा।

शेरशाह

शेरशाह अपनी राजसत्ता के अधीन राजपूत शासकों को लाना चाहता था। 1544 ई. में उसने मारवाड़ पर हमला किया और उसके बड़े हिस्से पर कब्जा करने में सफल रहा। रणथम्भौर पर भी उसका कब्जा हो गया, जबकि मेवाड़ और जयपुर के शासकों ने बिना लड़े ही उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

उसने अपनी मृत्यु से ठीक पहले कालिंजर पर भी कब्जा कर लिया। इस प्रकार, वह अपने उद्देश्य में सफल रहा । उनकी सफलता का एक प्राथमिक कारण यह था कि उन्होंने राजपूत शासकों के राज्य को गिराने की कोशिश नहीं की । जिन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार की, वे अपने राज्यों के स्वामी रह गए ।

अकबर

- अकबर पहला मुग़ल सम्राट था, जिसने राजपूतों के प्रति एक सुनियोजित नीति अपनाई । उनकी राजपूत नीति के निर्माण में विभिन्न कारकों ने भाग लिया । अकबर एक साम्राज्यवादी था । वह अपने शासन को यथासंभव भारत के क्षेत्र में लाना चाहता था।
- इसलिए राजपूत शासकों को उसकी अधीनता में लाना आवश्यक था। अकबर राजपूतों की शिष्टता, आस्था, मर्यादा, युद्ध कौशल आदि से प्रभावित था । उसने उन्हें अपने दुश्मन के रूप में बदलने के बजाय उनसे दोस्ती करना पसंद किया।
- अकबर ने राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की, लेकिन साथ ही उन्हें अपनी अधीनता में लाने की इच्छा भी की।
- हम राजपूत शासकों के बारे में निम्नलिखित तीन सिद्धांत पाते हैं:-

(क) उसने राजपूतों के मजबूत किलों पर कब्जा कर लिया जैसे कि चित्तौड़, मेड़ता, रणथम्भौर, **कालिंजर** आदि के किले । इसने राजपूतों की शक्ति को कमजोर कर दिया ताकि वे प्रतिरोध की पेशकश कर सकें।

(ख) उन राजपूत शासकों ने या तो अपनी संप्रभुता स्वीकार कर ली या उनके साथ वैवाहिक संबंधों में प्रवेश किया जो स्वेच्छा से अपने राज्यों के स्वामी थे। उन्हें राज्य में उच्च पद दिए गए थे, और उनके प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं था। हालाँकि, उन्हें सम्राट को वार्षिक कर देने के लिए कहा गया था।

(ग) जिन राजपूत शासकों ने उनका विरोध किया, उन पर हमला किया गया और उनकी संप्रभुता को स्वीकार करने के लिए उनको मजबूर करने के प्रयास किए गए। मेवाड़ का मामला इसका सबसे अच्छा उदाहरण था।

- 1562 ई. में मेड़ता के किले पर कब्जा कर लिया गया था, जो जयमल के अधीन था, जो मेवाड़ के शासक के सामंती प्रमुख थे। 1568 ई. में, चित्तौड़ को मेवाड़ से छीन लिया गया और 1569 ई. में राजा सुरजन राय को रणथम्भौर के किले को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसी वर्ष, राजा रामचंद्र ने स्वेच्छा से कालिंजर के किले को अकबर को सौंप दिया।
- उन शासकों में जिन्होंने अकबर की संप्रभुता को स्वेच्छा से स्वीकार किया था, आमेर के राजा भारमल थे। वह 1562 ई. में अकबर से मिला, उसने उसकी संप्रभुता स्वीकार कर ली और अपनी बेटी की शादी उससे कर दी। इसी राजकुमारी ने सलीम को जन्म दिया। अकबर ने राजा भारमल, उनके बेटे, भगवान दास और उनके पोते मानसिंह को उच्च मानस पुरस्कार दिया ।
- चित्तौड़ के किले के पत्तन के बाद बीकानेर और जैसलमेर जैसे कुछ राजपूत राज्यों ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली, जबकि उनमें से कुछ ने उसके साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश किया। हल्दीघाटी की लड़ाई के बाद कुछ और राजपूत शासकों जैसे बाँसवाड़ा, बूँदी और ओरछा ने भी अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार, अधिकांश राजपूत शासकों ने बिना किसी लड़ाई के अकबर को अपना राज्य सौंप दिया, उनकी सेवा में प्रवेश किया, उनके वफादार सहयोगी बने और उनमें से कुछ उनके रिश्तेदार भी बने ।
- एकमात्र राज्य जिसने अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था वह मेवाड़ था। मेवाड़ का शासक परिवार, सिसोदिया राजस्थान के राजपूत शासकों में सबसे

सम्मानित परिवार था। मेवाड़ के तत्कालीन शासक उदय सिंह थे। मेवाड़ को राजनैतिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से जीतना आवश्यक था। राणा उदयसिंह ने मालवा के भगोड़े शासक, बाज बहादुर और विद्रोही- मिर्जा को आश्रय दिया था।

- राणा ने अकबर की संप्रभुता को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था और उन राजपूत शासकों को देखा था जिन्होंने अकबर के साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश किया था। मेवाड़ की विजय के बिना अकबर उत्तरी भारत की अपनी विजय को पूरा नहीं कर सकता था। इसके अलावा, मेवाड़ की अधीनता अन्य राजपूत शासकों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करने के लिए आवश्यक थी। मेवाड़ की विजय आर्थिक दृष्टिकोण से भी उपयोगी थी।
- गुजरात के बंदरगाहों के माध्यम से पश्चिमी क्षेत्र के साथ उत्तरी भारत का व्यापार राजस्थान के माध्यम से किया गया था ।
- राणा उदयसिंह ने अपने रईसों की सलाह पर चित्तौड़ छोड़ दिया और उदयपुर को अपनी नई राजधानी बनाया। अकबर ने चित्तौड़ को घेर लिया और 1568 ई. में कुछ महीनों की लड़ाई के बाद उस पर कब्जा कर लिया। लेकिन इसने मेवाड़ की विजय को पूरा नहीं किया क्योंकि इसका अधिकांश क्षेत्र अभी भी राणा के साथ बना हुआ था।
- राणा उदयसिंह की मृत्यु 1572 ई. में हुई थी कर्नल टॉड ने उदयसिंह को कायर बताया। हालाँकि, यह उचित नहीं है। अपने रईसों द्वारा सलाह दिए जाने पर उदयसिंह ने अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए किले को छोड़ दिया। उन्होंने जीवन भर अपना राज्य अकबर को नहीं सौंपा।
- अकबर के प्रति उनका विरोध राजपूत इतिहास का एक शानदार अध्याय बन गया है। अकबर ने राजा मानसिंह, राजा भगवान दास और राजा टोडर मल को क्रमशः उनकी अधीनता स्वीकार करने की आवश्यकता के राणा को समझाने के लिए प्रेरित किया। लेकिन राणा ने अकबर के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।
- 1576 ई. में, अकबर ने मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए एक बड़ी सेना के साथ राजा मानसिंह को भेजा और हल्दीघाटी की प्रसिद्ध लड़ाई हुई। राणा पराजित हुआ और उसने पहाड़ियों और जंगलों में शरण ली। उन्होंने जीवन में तमाम तरह के कष्ट झेले लेकिन आत्मसमर्पण करने से इन्कार कर दिया। उन्होंने जीवन भर मुगलों के खिलाफ डटकर संघर्ष किया और मेवाड़ के बड़े हिस्से को चित्तौड़ के किले को छोड़कर फिर से हासिल करने में सफल रहे ।
- उनकी मृत्यु 1597 ई. में हुई थी । उनकी मृत्यु के बाद, उनके पुत्र, अमरसिंह ने भी मुगलों का विरोध जारी रखा। इस प्रकार, अकबर मेवाड़ को अपने अधीन करने में विफल रहा, हालांकि उसने प्रतिरोध की अपनी शक्ति को कमकर दिया । मेवाड़ ने अपनी ओर से शानदार लड़ाई लड़ी, लेकिन अकबर की विस्तारवादी नीति की जाँच करने में विफल रहा।
- अकबर की राजपूत नीति एक भव्य सफलता थी। मेवाड़ को छोड़कर सभी राजपूत राज्यों ने अकबर की संप्रभुता को स्वीकार किया।
- **कर्नल टॉड ने लिखा-** "अकबर राजपूत स्वतंत्रता के पहले सफल विजेता थे । अकबर की राजपूत नीति के कारण, राजपूत अपने स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व को बनाए रखने के अपने आदर्श को भूल गए और उन्होंने मुगल सम्राट के साथ खुशी से अपनी ताकत जमा दी। यह अकबर की सबसे बड़ी सफलता थी।
- इसने मुग़ल साम्राज्य के विस्तार और उसे मजबूत करने में मदद की। यह कहना गलत है कि अकबर ने राजपूतों को अपमानित करने के उद्देश्य से राजपूत राजकुमारी से शादी की। उससे पहले, मुस्लिम शासकों ने हिंदू और राजपूत महिलाओं को उनसे शादी करने के लिए मजबूर किया था।
- इसके विपरीत, अकबर ने किसी भी राजपूत शासक को अपने साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश करने के लिए मजबूर नहीं किया और न ही उनकी राजकुमारियों को उनसे शादी करने से पहले इस्लाम स्वीकार करने के लिए कहा। इसके अलावा, उन्होंने अपनी पत्नियों को सम्मानित किया, उन्हें अपने स्वयं के धर्म का पालन करने की अनुमति दी, उनके राजपूत रिश्तेदारों का सम्मान किया और उन्हें राज्य में उच्च पद दिए।
- यह कहना भी गलत है कि राजपूत कायर हो गए थे। अगर अकबर ने उन पर अत्याचार करने की कोशिश की होती, तो वे उसके खिलाफ उतना ही लड़ते, जितना बाद में औरंगजेब के खिलाफ लड़े थे। वे मुग़ल सम्राट के वफादार समर्थक बन गए क्योंकि अकबर ने अपनी सेवाओं और उसके प्रति मित्रता के बदले में उन्हें अधिकांश उदार शर्तों की पेशकश की।
- अकबर ने बस यह चाहा कि राजपूतों को उसकी संप्रभुता को स्वीकार करना चाहिए, उसे वार्षिक श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए, उसकी विदेश नीति को उसके सामने आत्मसमर्पण करना चाहिए, जब आवश्यक हो तो अपनी सेनाओं के साथ उसका समर्थन करें और खुद को मुग़ल साम्राज्य के साथ एक मानें। बदले में, अकबर उन्हें अपने आंतरिक मामलों में स्वतंत्रता देने, उन्हें सम्मान देने, उनकी योग्यता के अनुसार राज्य में सेवाएं देने और उन्हें पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए तैयार किया गया था।
- इसके अलावा, एक तथ्य और भी ध्यान में रखना होगा कि जब अकबर ने उन सभी मुस्लिम शासकों के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था, जिन्हें उसने हराया था, तब उसने गोंडवाना के अलावा किसी भी राजपूत शासक के

अध्याय – 7

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

- भारत में राष्ट्रीय जागरण का काल 19 वीं शताब्दी का मध्य तथा उतरार्द्ध माना जाता है ।
- भारत में राष्ट्रीय जागरण के बारे में श्रीमति एनीबेसेंट ने कहा था की इस विराट आंदोलन के पीछे शताब्दियों का इतिहास है ।
- भारतीय इतिहास में 18 वीं शताब्दी को 'अंधकार का युग' कहा जाता है ।
- राजा राममोहन राय को आधुनिक भारत का पिता तथा नये युग का अग्रदूत कहा जाता है ।
- राजा राममोहन राय को पुनर्जागरण का 'सुबह का तारा 'कहा जाता है ।
- ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय द्वारा 20 अगस्त 1828 ई. को कलकत्ता में की गयी । जिसका उद्देश्य तत्कालीन हिन्दू समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे सती प्रथा, बहु विवाह, वेश्यागमन जातिवाद अस्पृश्यता आदि को समाप्त करना था ।
- ब्रह्म समाज आंदोलन का मुख्य सिद्धांत ईश्वर एक है ।
- राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा माना जाता है ।
- राजा राममोहन राय की प्रमुख कृतियों में 'प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस' प्रमुख है । इन्होंने संवाद कौमुदी (बांग्ला भाषा)तथा मिरातुल अखबार (फारसी भाषा)का भी सम्पादन किया ।
- राजा राममोहन राय ने 1814 ई. में आत्मीय सभा की स्थापना की।1815 ई. में इन्होंने वेदान्त कॉलेज के स्थापना की ।
- इन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन चलाया तथा पाश्चात्य शिक्षा के प्रति अपना समर्थन दिया ।
- कालांतर में देवेन्द्रनाथ टैगोर 1818 ई. 1905 ई. ने ब्रह्म समाज को आगे बढाया इनके द्वारा ही केशवचन्द्र सेन को ब्रह्म समाज का आचार्य नियुक्त किया गया ।
- लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का सूत्रपात किया था।
- 1829 ई. में विलियम बैंटिक ने भारत में सती प्रथा पर रोक लगा दी इस कार्य में सहयोग देने में राजा राममोहन राय की प्रमुख भमिका थी ।

- **आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती थे**
- इन्होंने 1875 ई. में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी । आर्य समाज की अथापना का मुख्य उद्देश्य मुसलमानों को पुनःहिन्दू धर्म ग्रहण करने की प्रेरणा देना था
- स्वामी दयानंद सरस्वती को बचपन पे मूलशंकर के नाम से जाना जाता था । इनके गुरु स्वामी विरजानन्द थे ।
- राममोहन राय को राजा की उपाधि मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने प्रदान की थी ।
- राजा राममोहन राय की समाधी ब्रिस्टल (इंग्लैंड) में स्थित है ।
- इन्होंने अपने उपदेशों में मूर्ति पूजा, बहुदेववाद, अवतारवाद, पशुबलि, श्राद्ध, जंत्र, तंत्र, मंत्र, झूठे कर्मकांड, आदि की आलोचना की तथा पुनः 'वेदों की ओर लोटो का नारा दिया था ।
- इनके विचारों का संकलन इनकी कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में मिलता है जिसकी रचना इन्होंने हिंदी में की थी ।
- सामाजिक सुधार के क्षेत्र में इन्होंने छुआछुत एवं जन्म के आधार पर जाति प्रथा की आलोचना की ।
- भारत का समाज सुधारक मार्टिन लूथर किंग दयानंद सरस्वती को कहा जाता है ।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम स्वराज शब्द का प्रयोग किया और हिंदी को राष्ट्र भाषा माना ।
- बंगाली नेता राधाकांत देव ने सती प्रथा का समर्थन किया था ।
- स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा चलाये गए शुद्धि आंदोलन के अंतर्गत उन लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में आने का मोका मिला जिन्होंने किसी कारणवश कोई और धर्म स्वीकार कर लिया था ।
- समाज सुधारक महादेव गोविन्द रानाडे को महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है ।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुयायियों में लाला हंसराज ने 1886 ई. में लाहौर में '<u>दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना</u> की तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने 1901 ई. में हरिहर के निकट कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की ।

भारतीय संस्था थियोसिफिकल सोसायटी

- भारतीय संस्था थियोसिफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 ई. में मैडम ब्लावत्सकी एवं कर्नल आल्कोट ने न्यूयॉर्क में की थी ।
- जनवरी 1882 ई. में वे भारत आये तथा मद्रास में अड्यार के निकट मुख्यालय स्थापित किया ।
- भारत में इस आंदोलन की गतिविधियों को फेलाने का श्रेय श्रीमती एनीबेसेंट को दिया जाता है ।
- 1898 ई. में उन्होंने बनारस में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो आगे चलकर 1916 ई. में **बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय** बन गया । आयरलेंड की होमरूल लीग की तरह बेसेंट ने **भारत में होमरूल लीग की स्थापना की** ।

- **स्वामी विवेकनद** की मुख्य शिष्या सिस्टर निवेदिता थी
- वास्तव में भारत की एकता इसकी विभिन्नताओं में ही निहित है । हिन्दू धर्म एवं संस्कृति ने सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में सदा से बांध रखा है । यह विचार बीसेंट स्मिथ का है ।
- 1893 ई. में शिकागो सम्मलेन में स्वामी विवेकान्द ने भाग लिया था ।

- रामकृष्ण मिशन की स्थापना स्वामी विवेकानंद ने 1897 ई. में की थी।
- रामकृष्ण आंदोलन के मुख्य प्रेरक स्वामी रामकृष्ण परमहंस थे रामकृष्ण की शिक्षाओं के प्रचार का श्रेय उनके योग्य शिष्य स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्र नाथ दत्त)को दिया जाता है।
- 1893 ई. में 14 वर्ष के बाद योगी राज अरविन्द घोष 1872 -1950 ई. की भारत भूमि पर वापसी हुई। (1893 ई. में उन्होंने एक लेखमाला न्यू लैम्प फॉर ओल्ड ")प्रकाशित किया।
- राजनैतिक सुधारों को लेकर विरोध करने वाले पहले भारतीय सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे।
- प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 ई. में केशव चन्द्र सेन के सहयोग से डा. आत्माराम पांडुरंग ने बम्बई में की थी।
- भारत सेवक समाज सर्वेन्ट्स ऑफ़ इण्डिया सोसायटी की स्थापना 1905 ई. में गोपाल कृष्ण गोखले ने मुम्बई में की थी।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह को दिल्ली चलो सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। व्यक्तिगत सत्याग्रह की शुरुआत पवनार से 17 अक्टूबर 1940 से आरम्भ हुई थी।
- सत्यशोधक समाज की स्थापना ज्योतिबा फुले द्वारा की गयी थी।
- सम्पति के निष्कासन् के सिद्धांत के प्रतिपादक दादा भाई नारोजी थे।
- भारतीयों द्वारा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित प्रथम समाचार पत्र हिन्दू पैट्रियॉट था।
- बहिष्कृत भारत पत्रिका का संबंध डॉ. भीमराव अम्बेडकर से था।
- महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित हरिजन सेवक संघ के संस्थापक अध्यक्ष घनश्याम दास बिडला थे।
- भारत में यंग बंगाल आंदोलन प्रारम्भ करने का श्रेय हेनरी विवियन डेरोजियो को है एंग्लो -इंडियन डेरोजियो कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज के अध्यापक थे।
- स्वदेशवाहिनी नामक पत्रिका के सम्पादक के.रामकृष्ण पिल्लै थे।
- डेरोजियो ने ईस्ट इण्डिया नामक दैनिक पत्र का भी सम्पादन किया
- हेनरी विवियन डेरोजियो को आदुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना गया है।
- महात्मा गाँधी ने 1924 ई. में बेलगावं कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्षता की थी।
- इंडियन नेशन अखबार का प्रकाशन पटना से होता था।
- साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना 1878 ई. में कलकत्ता में शिवनाथ शास्त्री,आनंद मोहन बोस ने की थी।
- हाली पद्धति बँधुआ मजदूरी से संबंधित है।
- विधवा पुनर्विवाह को कानूनी रूप से वैध करवाने में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।
- बहुजन समाज के संस्थापक मुकुंदराव पाटिल थे।
- पंडित रामाबाई सरस्वती द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए आर्य महिला समाज की स्थापना की गयी।
- भारत में मुस्लिम सुधार आंदोलन का प्रवर्तक सर सैय्यद अहमद खान को माना जाता है।
- ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को चुनौती देने के लिए आत्म सम्मान आंदोलन वी. रामास्वामी नायकर के द्वारा चलाया गया।
- गुलामगिरी पुस्तक के लेखक ज्योतिबा फुले थे।
- धर्म सभा की स्थापना 1829 ई. में कलकत्ता में राधाकांत देव ने की थी।
- द्वारकानाथ टैगोर द्वारा वर्ष 1838 में स्थापित भारत की प्रथम राजनैतिक संस्था लैंडहोल्डर्स सोसायटी थी।
- वन्देमातरम समाचार पत्र 1909 ई. में प्रकाशित किया गया इसके संस्थापक लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा थे।
- महात्मा गाँधी केवल एक बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 27 दिसम्बर 1885 को मुम्बई में हुआ था।
- वहाँ बी आंदोलन को भारत में सबसे ज्यादा प्रचारित करने का श्रेय सैय्यद अहमद बरेलवी एवं इस्लाम हाजी मौलवी मोहम्मद को दिया जाता है।

<u>उदारवादी आंदोलन</u>

- भारतीय राष्ट्रीयता का जनक उदारवादियों को कहा जाता है।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जनक ए.ओ.ह्युम को कहा जाता है।
- इंडियन नेशनल यूनियन ने दिसम्बर 1884 में एक कॉन्फ्रेंस को बुलाने का निर्णय लिया था, जिसमें इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की गयी।
- एनी बेसेंट ने कॉमनवील साप्ताहिक प्रत्रिका के माध्यम से स्वशासन की माँग की।
- मोहम्मद अली जिन्ना को हिन्दू-मुस्लिम एकता का दूत सरोजनी नायडू ने कहा था।
- कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में सेफ्टी वॉल्व का सिद्धांत लाला लाजपत राय के द्वारा दिया गया था।
- अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर 1885 को हुई थी इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेशचन्द्र बनर्जी थे।
- भारत के तेजस्वी पितामह के नाम से दादाभाई नौरोजी जाने जाते है।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन की अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने की थी।
- ये उदारवादी वैधानिक तरीके में विश्वाश करते थे।
- बाल गंगाधर तिलक को अशांति का जनक वेलेंटाइन शिरोल ने कहा था।
- फेबियन आंदोलन का प्रस्ताव एनी बेसेंट ने दिया था।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 3

वायु दाब एवं पवनें

मौसम के सभी तत्व (मेघ, वर्षा, आंधी, तूफान तथा पवन आदि) वायुदाब द्वारा नियंत्रित होते हैं समान ऊंचाई पर स्थित दो स्थानों के बीच वायुदाब के परिवर्तन की दर को वायुदाब प्रवणता कहते हैं। वायु के क्षेतिज गति का मूल कारण वायुदाब प्रवणता है

विक्षेपबल (Deflection force) – पृथ्वी के अक्षीय गति(rotation) के कारण हवाओं की दिशा में विक्षेप हो जाता है। इस कारण परिवर्तनकारी बल को विक्षेप बल या कोरियालिस बल कहते हैं। इस बल के कारण ही उत्तरी गोलार्ध में सभी हवाएं प्रवणता की दिशा की दाहिनी ओर तथा दक्षिणी गोलार्ध में बाई ओर मुड़ जाती हैं। पृथ्वी के धरातल पर क्षेतिज पवनें दाब प्रवणता प्रभाव, घर्षण बल एवं कोरियालिस बल प्रभावों का संयुक्त परिणाम हैं विषुवत वृत्त के निकट उष्णकटिबंधीय चक्रवात नहीं बनते हैं क्योंकि विषुवत वृत्त पर कोरियालिस बल शून्य होता हैं और अपने समदाब रेखाओं के समकोण पर बहती हैं। अतः निम्न दाब क्षेत्र और अधिक गहन होने के बजाए पूरित हो जाती हैं। यही कारण हैं कि विषुवत वृत्त के निकट उष्णकटिबंधीय चक्रवात नहीं बनते हैं।

पवन (Wind) **पृथ्वी के धरातल पर वायुदाब में क्षैतिज विषमताओं के कारण हवा उच्च वायुदाब क्षेत्र से निम्न वायुदाब क्षेत्र की ओर बहती हैं. क्षैतिज रूप से इस गतिशील हवा को पवन कहते हैं. ऊर्ध्वाधर दिशा में गतिशील हवा को वायुधारा कहते हैं.**

अगर पृथ्वी स्थिर होती और उसका धरातल समतल होता तो पवन उच्च वायुदाब वाले क्षेत्र से सीधे निम्न वायुदाब वाले क्षेत्र की ओर समदाब रेखाओं पर समकोण बनाती हुई चलती. पर वास्तविक स्थिति यह है कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूर्णन कर रही हैं और उसका धरातल समतल नहीं हैं. पवन कई कारणों से अपनी दिशा में परिवर्तन करती हुई चलती हैं.

ये कारण हैं- दाब प्रवणता बल, कॉरिऑलिस प्रभाव (Coriolis effect), अभिकेंद्रीय त्वरण और भू-घर्षण.

कॉरिऑलिस प्रभाव (Coriolis effect) – पृथ्वी के घूर्णन के कारण पवनें अपनी मूल दिशा में विक्षेपित हो जाती हैं. इसे कॉरिऑलिस बल कहते हैं. इसका नाम फ्रांसीसी वैज्ञानिक के नाम पर पड़ा है. इन्होने सबसे पहले इस बल के प्रभाव का वर्णन 1835 में किया था.

पवन निम्न प्रकार की होती हैं

1. प्रचलित पवन (The prevailing wind)
2. मौसमी पवन (Seasonal Wind)
3. स्थानीय पवन (Local Wind)

प्रचलित पवन (The prevailing wind)

पृथ्वी के विस्तृत क्षेत्र पर एक ही दिशा में वर्ष भर चलने वाली पवन को प्रचलित पवन या स्थायी पवन कहते हैं. स्थायी पवनें एक वायु-भार कटिबन्ध से दूसरे वायु-भार कटिबन्ध की ओर नियमित रूप से चला करती हैं. इसके उदाहरण हैं- पछुआ पवन, व्यापारिक पवन और ध्रुवीय पवन.

(a) पछुआ पवन (Pachua wind)

दोनों गोलार्द्धों में उपोष्ण उच्च वायुदाब कटिबंधो से उपध्रुवीय निम्न वायुदाब कटिबंधों की ओर चलने वाली स्थायी हवा को, इनकी पश्चिम दिशा के कारण पछुआ पवन कहते हैं. पछुआ पवन का सर्वश्रेष्ठ विकास 40 डिग्री से 65 डिग्री दक्षिण अक्षांशों के मध्य पाया जाता है. यहां के इन अक्षाशों को गरजता चालीसा, प्रचण्ड पचासा और चीखता साठा कहा जाता है. ये सभी नाम नाविकों के दिए हुए हैं.?

(b) व्यापारिक पवन (Commercial wind)

लगभग 30 डिग्री उत्तरी और दक्षिणी अक्षांशों के क्षेत्रों या उपोष्ण उच्च वायुदाब कटिबंधो से भूमध्य रेखीय निम्न वायुदाब कटिबंधों की ओर दोनों गोलार्द्धों में वर्ष भर निरंतर प्रवाहित होने वाले पवन को व्यापारिक पवन कहा जाता है.

(c) ध्रुवीय पवन (Polar wind)

ध्रुवीय उच्च वायुदाब की पेटियों से उपध्रुवीय निम्न वायुदाब की पेटियों की ओर प्रवाहित पवन को ध्रुवीय पवन के नाम से जाना जाता है. उत्तरी गोलार्द्ध में इसकी दिशा उत्तर- पूर्व से दक्षिण- पश्चिम की ओर वहीं दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिण- पूर्व से उत्तर- पश्चिम की ओर है.?

मौसमी पवन (Seasonal Wind)

मौसम या समय के परिवर्तन के साथ जिन पवनों की दिशा बदल जाती है उन्हें मौसमी पवन कहा जाता है. जैसे- मॉनसूनी पवन, स्थल समीर और समुद्री समीर.

स्थानीय पवन (Local Wind)

गर्म हवाएं एवं प्रवाह क्षेत्र (Hot air and flow area)

चिनुक (Chinuk) – यह संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में रॉकी पर्वत श्रेणी के पूर्वी ढाल के साथ चलने वाला गर्म या शुष्क पवन है. यह पवन रॉकी पर्वत के पूर्व के पशुपालकों के लिए बड़ा ही लाभदायक है.

फॉन (Phon) – यह आल्पस पर्वत के उत्तरी ढाल से नीचे उतरने वाली गर्म और शुष्क हवा है. इसका सर्वाधिक प्रभाव स्विट्जरलैंड में होता है. इसके प्रभाव से अंगूर जल्दी पक जाते हैं.

हरमट्टन (Harampton) – यह सहारा रेगिस्तान में उत्तर- पूरब दिशा में चलने वाली गर्म और शुष्क हवा है. यह पवन सहारा से गिनी तट की ओर बहती है.

अध्याय – 10

प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन

- दक्षिण अमेरिका में खनिजों का प्रमुख भंडार क्षेत्र पैंटागोनिया का पठार है।
- पृथ्वी के भू-गर्भ में सबसे अधिक निकेल(Ni) धातु पाई जाती है तथा उसके बाद लोहे(Fe) का स्थान है।
- डोनबास क्षेत्र कोयले के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
- जापान कोबाल्ट अयस्क के उत्पादन में आत्मनिर्भर है।
- रुकवा झील क्षेत्र(तंज़ानिया) कोयला खनिज के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
- अफ्रीका का सर्वाधिक ताँबा उत्पादक देश जाम्बिया है।
- हीरा(diamond) का सबसे बड़ा उत्पादक देश रूस है।
- विश्व में चाँदी(sliver) का सबसे बड़ा उत्पादक देश मेक्सिको है।
- विश्व में बोक्साइट(bauxite) का सबसे बड़ा उत्पादक देश ऑस्ट्रेलिया है।
- विश्व में टाइटेनियम(titanium) का सबसे बड़ा उत्पादक देश चीन है।
- विश्व में सबसे अधिक एलुमिनियम(aluminium) उत्पादक देश चीन है।
- जोहान्सबर्ग स्वर्ण खनन हेतु प्रसिद्ध है।

प्रमुख खनिज उत्पादक शीर्ष राष्ट्र

खनिज	शीर्ष उत्पादक राष्ट्र
एल्युमिनियम	चीन,रूस,भारत
बोक्साइट	ऑस्ट्रेलिया,चीन,गुयाना
क्रोमाइट	दक्षिण अफ्रीका,तुर्की,कजाखस्तान
कोयला	चीन,भारत,सयुक्त राज्य अमेरिका
कोबोल्ट	कांगो प्र.गण.,कैंलेडोनिया,चीन
ताबा	चिली,पेरू,चीन
हीरा	रूस, बोत्स्वाना,कनाडा
स्वर्ण	चीन,ऑस्ट्रेलिया,रूस
ग्रेफाइट	चीन,भारत,ब्राजील
जिप्सम	चीन,ईरान,थाईलेंड
लोह अयस्क	चीन,ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील
जस्ता	चीन,पेरू, ऑस्ट्रेलिया
मेंगज़ीन अयस्क	दक्षिण अफ्रीका,चीन,ऑस्ट्रेलिया
अभ्रक	ब्राजील,चीन,तुर्की
निकेल	कनाडा,ऑस्ट्रेलिया, चीन
चाँदी	मेक्सिको,पेरू,चीन
टंग्स्टन	चीन,वियतनाम,रूस
सीसा	चीन,ऑस्ट्रेलिया,पेरू
प्लेटिनम	दक्षिण अफ्रीका,रूस,जिम्बाब्वे
मलिब्डेनम	चीन,सयुक्त राज्य अमेरिका,चिली

- **थोरियम भंडारक शीर्ष राष्ट्र**

क्रम	भण्डारक राष्ट्र	भण्डार(टन में)
प्रथम	भारत	963,000
द्वितीय	सयुक्त राज्य अमेरिका	440,000
ततीय	ऑस्ट्रेलिया	300,000

- **परमाणु ऊर्जा के दो मुख्य खनिज थोरियम और युरेनियम है।**
- **पेट्रोलियम के प्रमुख खनन केंद्र**

सं.रा. अमेरिका	अप्लेशियन क्षेत्र,गल्फ तटीय क्षेत्र,कैलीफोर्निया
सउदी अरब	दम्माम,घावर व धहरान
कुवैत	बुरघान पहाड़ी(विश्व का व्रत्तम संचित भंडार
ईरान	लाली,करमशाह,नफ्त सफिद,हप्त केल
पूर्व सोवियत संघ	वोल्गा-यूराल क्षेत्र,बाकू क्षेत्र
इराक	किर्कुक,मोसुल,बसरा,तिकरित

- पेट्रोलियम के निर्यातक की मात्रा के आधार पर देशों का अवरोही क्रम है – सउदी अरब,रूस एवं ईराक
- बाकू क्षेत्र पेट्रोलियम उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
- **कच्चे तेल के शीर्ष उत्पादक एवं भंडारक राष्ट्र**

क्र.स.	उत्पादक राष्ट्र	भंडारक राष्ट्र
प्रथम	सयुक्त राज्य अमेरिका	वेनेजुअला
द्वितीय	सउदी अरब	सऊदी अरब
तर्तीय	रूस	कनाडा

- विश्व का सबसे बड़ा प्रमाणित तेल भंडार (certified oil reserve) वेनेजुएला में स्थित है।
- विश्व के तीन सबसे बड़े कच्चे तेल उत्पादकों देश है – संयुक्त राज्य अमेरिका,सउदी अरब एवं रूस
- दक्षिण-पूर्वी एशिया का सबसे बड़ा खनिज तेल उत्पादक देश इंडोनेशिया है।
- गैसोहाल(gasohol) का सबसे बड़ा उत्पादक एवं उपभोक्ता ब्राजील देश है।
- **विश्व के शीर्ष 3 युरेनियम उत्पादक राष्ट्र**

क्रम	उत्पादक राष्ट्र	उत्पादन(टनमें)
1	कजखसतान	23,800
2	कनाडा	13,325
3	ऑस्ट्रेलिया	5,672

- विश्व में युरेनियम के सर्वाधिक भंडार ऑस्ट्रेलिया में स्थित है।
- युरेनियम के प्रमुख अयस्क है - युरेनिनाइट(पिच्ब्लेड),यूरेनाइट एवं थोरियेनाइट
- युरेनियम अयस्क निक्षेप के लिए कनाडा देश प्रसिद्ध है।
- **पवन ऊर्जा की संभवित क्षमता वाले शीर्ष 4 राष्ट्र**

क्रम	राष्ट्र
1	चीन (33.6 %)
2	स.रा.अमेरिका(17.2%)
3	जर्मनी(10.4 %)
4	भारत (5.8 %)

- विश्व भर में परमाणु ऊर्जा के बाद गैर-पारम्परिक ऊर्जा का दूसरा सबसे बड़ा स्त्रोत पवन ऊर्जा है।
- पर्याप्त उत्पादन के साथ आर्थिक महत्त्व वाले खनिज : लौह अयस्क, मैंगनीज, अभ्रक, कोयला, सोना, इल्मेनाइट, बॉक्साइट व भवन निर्माण सामग्री आदि ।
- पर्याप्त संरक्षित भण्डार वाले खनिज : औद्योगिक मिट्टियां, क्रोमाइट, अणु खनिज आदि।
- औद्योगिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण किन्तु अल्प उपलब्धता वाले खनिज : टिन, गन्धक, निकल, तांबा, कोबाल्ट, ग्रेफाइट, पारा, खनिज तेल आदि।
- देश मे प्रमुख खनिजों के संरक्षित भण्डार निम्नानुसार है।

लौह अयस्क (Iron Ore)

- भारत में लौह अयस्क मुख्यतः प्रायद्वीपीय धारवाड़ संरचना में पाया जाता है
- विश्व में लौह अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक देश चीन है ।
- विश्व के कुल लौह अयस्क का लगभग 3 प्रतिशत भारत में निकाला जाता है
- किरुना लौह अयस्क(Kiruna iron ore) क्षेत्र स्वीडन देश में स्थित है ।
- कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत से भी अधिक निर्यात कर दिया जाता है
- गोवा में उत्पादित होने वाले संपूर्ण लौह अयस्क को निर्यात कर दिया जाता है ।
- भारत में लौह अयस्क मुख्यतः 4 प्रकार का प्राप्त होता है :

1. मैग्नेटाइट 2. हेमेटाइट 3. लोमोनाइट 4. सिडेराइट

- **मैग्नेटाइट :** यह सर्वोच्च किस्म का लौह अयस्क होता है,
- मैग्नेटाइट अयस्क के भण्डार कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, गोवा, झारखण्ड आदि राज्यों में पाये जाते हैं।
- **हेमेटाइट :** यह लाल या भूरे रंग का होता है । इसमें शुद्ध धातु की मात्रा 60-70 प्रतिशत तक होती है । यह मुख्यतः झारखण्ड, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटक व गोवा राज्यों में मिलता है।
- **लिमोनाइट :** इसका रंग पीला या हल्का भूरा होता है । इसमें 40 से 60 प्रतिशत तक शुद्ध धातु का अंश होता है। पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में इस किस्म का लौहा पाया जाता है ।।
- **सिडेराइट ;** इस किस्म के लौहे का रंग हल्का भूरा होता है । इसमें धातु का अंश 40 से 48 प्रतिशत तक होता है तथा अशुद्धियां अधिक होती है ।
- कच्चे लौहे की दृष्टि से भारत का विश्व में प्रथम स्थान है।
- विश्व में लौह अयस्क उत्पादक राज्यों में भारत का सातवां स्थान हैं ।
- प्रसिद्ध लौह अयस्क क्षेत्र मिडलैंड् यूनाइटेड किंगडम(UK) में स्थित हैं ।
- भारत में लौहा उत्पादित प्रमुख राज्य :-

स्थान	राज्य	उत्पादन %	प्रमुख जिले
1	**कर्नाटक**	25 %	
2	**उड़ीसा**	22 %	मयूरभंज
3	**छत्तीसगढ़**	20 %	बस्तर, दुर्ग रायगढ, बिलासपुर, मण्डला, बालाघाट सरगूजा
4	**झारखण्ड**	18 %	
5	**गुजरात**		पोरबन्दर, भावनगर, नवागर बड़ोदरा जूनागढ, खाण्डेश्वर
6	**केरल**		कोजीकोडे
7	**राजस्थान**		जयपुर, दौसा, उदयपुर

मैंगनीज (Manganese)

- मैंगनीज भारत की धारवाड़ चट्टानों में प्राकृतिक ऑक्साइड के रूप में मिलता है
- विश्व में मैंगनीज अयस्क के कुल उत्पादन में भारत का 6वाँ स्थान है
- निर्यात होने वाले मैंगनीज अयस्क का दो तिहाई अकेला जापान खरीदता है

मैंगनीज के संरक्षित भण्डार (Reserves of Manganese)

भारत में मैंगनीज के कुल भण्डार लगभग 23.3 करोड़ टन आंके गये हैं । मैंगनीज के कुल भण्डार की दृष्टि से भारत का विश्व में जिम्बाब्वे के पश्चात् दूसरा स्थान है । संरक्षित भण्डारों की दृष्टि से कर्नाटक का देश में 37.8 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान है ।

- भारत मैंगनीज उत्पादन में विश्व का पांचवा बड़ा देश हैं। मैंगनीज उत्पादक राज्य निम्न हैं –

स्थान	राज्य	उत्पादन %	प्रमुख जिले
प्रथम	उड़ीसा	37 %	
दूसरा	महाराष्ट्र	24 %	नागपुर, भण्डारा व रत्नागिरी
तीसरा	मध्यप्रदेश	20 %	बालाघाट छिन्दवाड़ा बिलासपुर, झाबुआ, माडला, घाट, बस्तर, जबलपुर व इंदौर

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
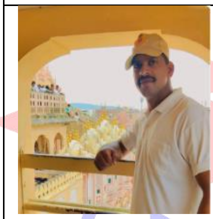	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others......

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/98bnwi

Online Order करें - https://shorturl.at/ixJQl

https://shorturl.at/belyl

Call करें - 9887809083